

Project progress report from January – March 2008

Project work has been initiated in first week of January 2008. Two project assistants have been shorted and appointed in February 2008 to assist the project activities. Following activities were performed during this period of time.

1. Earlier reported bat roosts in and around Jodhpur have been surveyed to assess their current population status and existing threats (Plate 1).
2. People in vicinity of bat roosts were interacted to short-out potential volunteers and *Tahsil* level representatives were selected and trained formally about the types, nature and ecological significance of bats. They are designated as *Chamgadam Mitra* (Bat Friend). Couple of onsite exposure field trips to nearby bat roosts was organized for their direct learning (Plate 2).
3. Poster and publicity material is designed and on underway of production these days. ZOO Outreach Organization, Coimbatore, India has been contacted for supply of free bat conservation related publicity and campaigning material.
4. Key persons from Bombay Natural History Society and local institutes like Department of Zoology, J.N.V. University, Jodhpur; Ecology and Rural Development Society; Desert Regional Station, Zoological Survey of India; *Mahila Mahavidhyalaya*; *Adarsh Mahavidhyalaya*; Dr. Radhakrishnan Women's Teachers Training College have been approached to take local level support to ensure greater success of bat conservation education campaign in study area.
5. Local newspaper media have been approached to attain publicity support to bat conservation campaign and to spread bat conservation message among locals (Plate 3).



Plate 1: Principal Investigator, surveying the bat roosts in and around Jodhpur of the Thar Desert in Rajasthan, India.

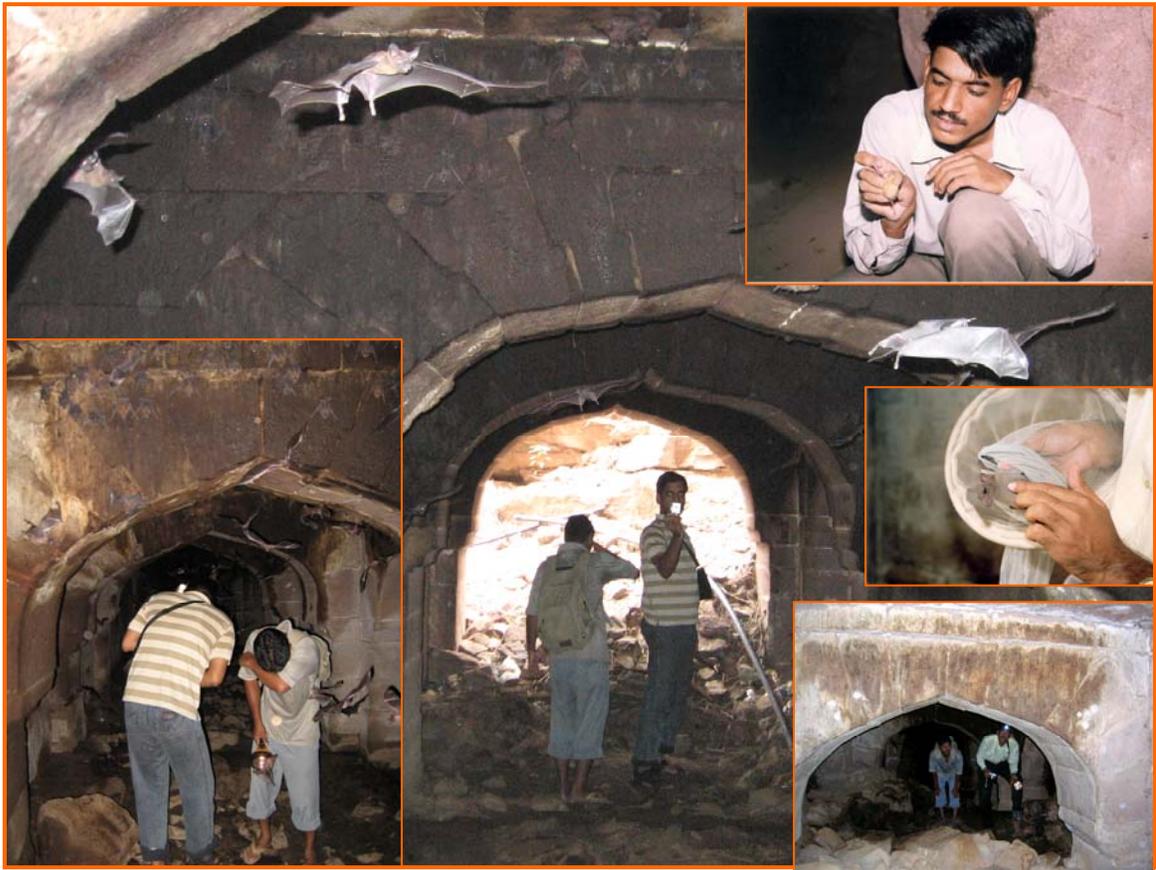


Plate 2: Volunteers on bat roost for onsite exposure, and demonstration about how to identifying bats.

दैनिक भास्कर

चार प्रजातियों के चमगादड़ जोधपुर से लुप्त

इंग्लैंड की संस्था ने इसकी सुरक्षा के लिए एक साल की परियोजना स्वीकृत की, मुंबई के वैज्ञानिक ने प्रमुख स्थानों से जुटाए तथ्य, संरक्षण के लिए चमगादड़ मित्र जोड़े जाएंगे।

भास्कर न्यूज़, जोधपुर

चमगादड़ों की संख्या में अप्रत्याशित गिरावट को देखते हुए अब इनके संरक्षण के लिए इंग्लैंड की संस्था आगे आई है। लंदन स्थित रूफर्ड माउन्टज लाईंग फाउंडेशन की वित्तीय मदद से जोधपुर जिले में चमगादड़ों पर रिसर्च और उनके संरक्षण के प्रोजेक्ट पर काम शुरू हो गया है। इसके तहत युवाओं जागरूक करने के साथ चमगादड़ मित्र बनाया जाएगा।

मुंबई स्थित बोम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के वैज्ञानिकों ने इस प्रोजेक्ट के तहत जोधपुर जिले में मौजूद चमगादड़ों के निवास स्थानों का सर्वेक्षण पूरा कर लिया है। अब चमगादड़ प्रजातियों की संख्या व उनके संरक्षण के लिए जल्दी सुझावों की एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाएगी। साथ ही जिले के तहसील स्तर पर स्वयंसेवी जागरूक युवाओं का चयन कर उन्हें 'चमगादड़ मित्र' के रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा। युवाओं को चमगादड़ों की विभिन्न प्रजातियों व पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ बनाने में उनकी भूमिका के बारे में अवगत कराया जाएगा। इसके साथ जिले की विभिन्न स्कूलों में चमगादड़ों के बारे में महत्वपूर्ण व्याख्यान देकर लोगों को जागरूक किया जाएगा, ताकि स्वयंसेवक एवं विद्यार्थी स्थानीय लोगों के साथ मिलकर अपने क्षेत्र में पाई जाने वाले चमगादड़ों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

चार प्रजातियाँ अब नजर नहीं आती

चमगादड़ों के प्रति आम लोगों में उदासीनता, अज्ञानता एवं अंधविश्वास के चलते विगत दो दशकों में यहाँ पाई जाने वाली चमगादड़ों की प्रजातियों की संख्या में अप्रत्याशित कमी आई है। चमगादड़ों की स्थिति पर कार्य कर चुके बोम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के वैज्ञानिकों के अनुसार 1960 से 1980 के दौरान यहाँ कुल बारह प्रकार की चमगादड़ प्रजातियाँ दर्ज की गई थीं। जबकि हाल ही में किए गए सर्वेक्षण में अब इनकी संख्या घटकर मात्र नौ हो गई है। इसमें पूर्व में मौजूद चार चमगादड़ प्रजातियाँ मेगाडरमा लायडर, हिपोसिडेरस फुल्बस, टाडारिडा इन्जिप्टियाका, एवं पिपिस्ट्रेकिंस डारमैरी अब नजर ही नहीं आती, जबकि फलखोर किस्म की एक नई प्रजाति साइनोटेरस इस्फिक्स यहाँ नई रिपोर्ट हुई है।

वर्षों हैं खतरा

पर्यावरण में बदलाव और लोगों में व्याप्त भ्रांतियाँ चमगादड़ों के लिए बड़ा खतरा बनकर सामने आई हैं। अधिकांश लोग चमगादड़ों को अपने आस-पास होने पर अनहोनी का प्रतीक मानते हुए उन्हें खून चूसने वाला, नाक खा जाने वाला जीव मानकर उनके निवास स्थानों को नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते रहते हैं। जबकि विशेषज्ञों के अनुसार चमगादड़ न तो कन्यजीव पर हमला करते हैं, और ना ही लोगों के लिए नुकसानदायक हैं। चमगादड़ फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों एवं मच्छरों का भक्षण कर हमें फायदा पहुँचाते हैं। वहीं फलखोर चमगादड़ तो कई मायनों में फायदेमंद है। वैज्ञानिकों के अनुसार एक कीटखोर चमगादड़ एक रात में कम से कम सौ मच्छरों का भक्षण करता है।



एक नई प्रजाति भी

शोधकर्ता की माने तो जोधपुर शहर में परीक्षण के दौरान पहली बार फलखोर किस्म की एक नई प्रजाति देखने को मिली है। यह साइनोटेरस इस्फिक्स वाली इस चमगादड़ के जोधपुर में अज्ञान को देखने के बाद इस पर भी अलग से परीक्षण किया जाएगा।

नए निर्माण से भी पड़ा असर

मेट्रो सिटी का रूप लेते जोधपुर शहर में निर्माण कार्य भी तेजी से हो रहे हैं। जिसके चलते कई वर्षों पुराने मकानों के बाहर जहाँ चमगादड़ों का निवास हुआ करता था, वो इमारतें नष्ट होने से इनके जीवन पर खासा असर पड़ा है। वैज्ञानिकों की माने तो पुराने बिल्डिंगों पर इनके रहने का पर्याप्त स्थान था उस जगह पर बड़े कॉम्प्लेक्स खड़े हो चुके हैं।



■ चमगादड़ का बच्चा।



■ मंडोर में चमगादड़ों का परीक्षण करते डॉ. के.आर. सेण्वा।

चमगादड़ों के प्रमुख स्थान

जोधपुर में चमगादड़ के प्रमुख स्थानों में मंडोर गार्डन के न्यूजियम के नीचे और देवल की शाल, डीआरएम निवास स्थान के पास लगे पेड़ों पर, बालसमंद गार्डन और मेहरानगढ़ में चांदपोल की जाने वाले रास्ते के बीच आया चोखेलाय कुआँ इनका प्रमुख निवास है।

“इंग्लैंड की संस्था द्वारा चमगादड़ पर शोध करने के लिए हमें एक साल में चार लाख रुपये का बजट मिला है। जोधपुर जिले में सर्वेक्षण हो चुका है। अब रिपोर्ट बनाने की तैयारियाँ चल रही हैं, इसमें सात माह लग जाएंगे।

— डॉ. के.आर. सेण्वा, चमगादड़ विशेषज्ञ, बोम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, मुंबई।

Plate 3: An article on project activities published in leading national newspaper (Dainik Bhaskar, www.bhaskar.com, on April 8th 2008).

<http://digital.bhaskar.com/dainikrajasthan/epapermain.aspx?queried=11&username=&useremailid=&parenteditioncode=11&eddate=4%2f8%2f2008>